Tender Heart High School, Sector - 33 - B, Chandigarh.

कक्षा - दसवीं	विषय - हिन्दी साहित्य
दिनांक - 02.05.24	शिक्षिका - श्रीमती कल्पना शर्मा

पुस्तक : एकांकी संचय

पाठ - 3 'मातृभूमि का मान' (एकांकी) लेखक - हरिकृष्ण प्रेमी

निम्नलिखित अवतरण पर आधारित प्रश्नों के उत्तर लिखिए :-

(1) "महाराव, आज राजपूतों को एक सूत्र ---- वह है महाराणा लाखा।"

प्रश्न 1. वक्ता और श्रोता कौन हैं ? वाक्य का संदर्भ स्पष्ट कीजिए।

उत्तर - प्रस्तुत कथन का वक्ता मेवाड़ का सेनापति अभयसिंह है और श्रोता बूँदी के राव हेमू हैं। अभयसिंह बूँदी के राव हेमू के सामने महाराणा लाखा की इच्छा रखते हुए महाराज राव हेमू को बूँदी राज्य को मेवाड़ में मिला लेने की सलाह देता है ताकि सभी राजपूत राजाओं में एकता स्थापित हो सके एवं सभी राजपूत राज्य संगठित शक्ति के रूप में विदेशी शक्तियों का आसानी से सामना कर सकें।

प्रश्न 2. राणा लाखा बूँदी को मेवाड़ के अधीन क्यों करना चाहते थे?

उत्तर - राणा लाखा मेवाड़ के शासक थे। वे बूँदी राज्य को (चितौड़) मेवाड़ के अधीन विजय प्राप्ति हेतु नहीं करना चाहते थे बल्कि वे चाहते थे कि जो राजवंश पहले मेवाड़ के अधीन थे, वे आज भी उसी तरह रहें। बूँदी राज्य भी उनमें से एक है। इस तरह संगठित होकर रहने से राजपूतों की ताकत बढ़ेगी। इसलिए वे सभी राजपूत वंशों को एकता के सूत्र में बाँधना चाहते थे ताकि विदेशी शक्तियों का सामना आसानी से कर सकें।

प्रश्न 3. वक्ता ने महाराणा लाखा के संबंध में क्या कहा ?

उत्तर - वक्ता अर्थात् सेनापति अभयसिंह ने महाराणा लाखा के संबंध में कहा कि आज राजपूतों को एकता के सूत्र में गूँथे जाने की आवश्यकता है और इस कार्य को करने की सामर्थ्य एवं शक्ति

महाराणा लाखा में हैं। इसलिए उन्होंने राव हेमू के पास एकता के सूत्र में बँधने का प्रस्ताव भेजा है।

प्रश्न 4. राव हेमू के अनुसार हाड़ा वंश किस प्रकार का अनुशासन मान सकते हैं ?

उत्तर - राव हेमू के अनुसार हाड़ा-वंश प्रेम का अनुशासन मानने को सदा से तैयार है। मेवाड़ की शक्ति के सामने न तो वह झुकने के लिए तैयार हैं और न ही महाराणा के अधीन होकर उनकी सेवा करना पसंद करेगा। बूँदी स्वतन्त्र राज्य है और स्वतंत्र रहकर महाराणाओं का आदर करता रह सकता है किन्तु किसी के अधीन होना या किसी की सेवा करना वह पसंद नहीं करेगा।

(ii) "ताकत की बात छोड़ो अभयसिंह ! ---- तोड़ने का श्रीगणेश हो गया है।"

प्रश्न 1. उपर्युक्त कथन किसने, किससे तथा किस संदर्भ में कहा है ?

उत्तर - उपर्युक्त कथन के वक्ता राव हेमू हैं, जो बूँदी के शासक हैं। यह कथन उन्होंने मेवाड़ के सेनापति अभयसिंह से तब कहा है जब सेनापति अभयसिंह ने यह कहा कि आज राजपूतों को एक सूत्र में बाँधने की बड़ी आवश्यकता है, और जो व्यक्ति यह माला तैयार करने अर्थात् राजपूतों की छिन्न-भिन्न शक्ति को एकत्रित करने की ताकत रखता है, वह महाराणा लाखा हैं। तब राव हेमू अभयसिंह से कहते हैं कि ताकत की बात छोड़ो अभयसिंह, केवल महाराणा लाखा ही राजपूतों को एकता के सूत्र में बाँधने की शक्ति नहीं रखते, बल्कि हर राजपूत को अपनी शक्ति पर गर्व है। राणा लाखा राजपूतों के एकीकरण का जो दंभ भर रहे हैं, उस दंभ को वे भूल जाएँ। इसी में उनकी कुशलता है क्योंकि छोटे-छोटे राजपूत-राज्य एकीकरण के नाम पर उनकी अधीनता स्वीकार करने के बजाए उनके खिलाफ़ तलवार उठा लेंगे और उनसे युद्ध करेंगे।

प्रश्न 2. अभयसिंह का परिचय दीजिए। वे कहाँ का संदेश लेकर आए हैं

उत्तर - अभयसिंह महाराणा लाखा के सेनापति हैं। वे कुशल सेनापति ही नहीं बुद्धिमान और कर्तव्यपरायण भी हैं। महाराणा लाखा

भी उन पर पूरा विश्वास करते हैं इसलिए वे राव हेमू तक अपना संदेश उन्हीं के द्वारा भेजते हैं।

अभयसिंह राव हेमू के पास यह संदेश लेकर आए हैं कि बूँदी राज्य मेवाड़ की अधीनता स्वीकार कर ले ताकि राजपूतों की असंगठित शक्ति को संगठित करके एक सूत्र में बाँधा जा सके। सभी राज्य अपनी शक्ति एक केन्द्र के अधीन रखें। निश्चय ही वह केंद्र होगा। मेवाड़ और शासक होंगे महाराणा लाखा। परन्तु राव हेमू ने यह कहकर उस प्रस्ताव को ठुकरा दिया कि बूँदी महाराणाओं का आदर तो करता है पर वह स्वतन्त्र रहना चाहता है।

प्रश्न 3. वक्ता ने अभयसिंह से किस प्रकार के अनुशासन को मानने की बात कही है?

उत्तर - (इस प्रश्न का उत्तर छात्र पहले प्रश्न के भाग 'घ' के उत्तर की सहायता से लिखेंगे।)

प्रश्न 4. 'वह माला तो बनी हुई है। हाँ, उस माला को तोड़ने का श्रीगणेश हो गया है।' — आशय स्पष्ट कीजिए।

उत्तर - बूँदी के शासक राव हेमू हर राजपूत को वीर मानते हुए उसकी स्वतन्त्रता को बनाए रखने की बात कहते हैं। वे स्वयं भी अपने राज्य बूँदी को किसी के अधीन नहीं देख सकते हैं। वे सोचते हैं कि राजपूत अलग-अलग रहकर भी एकता के सूत्र में बँधे हुए हैं। एक-दूसरे का आदर करते हैं। इस दृष्टि से उनकी एकता की कड़ी बन चुकी है। अब महाराणा लाखा ने राजपूतों को अपनी (महाराणा लाखा तथा मेवाड़ के छत्र के नीचे रहने की बात) अधीनता (गुलामी) स्वीकार करने की बात कहकर एकता की माला को तोड़ने की शुरुआत कर दी है। अर्थात् राणा लाखा की अधीनता न स्वीकार करने वाले राजपूत अब तलवार उठाएँगे और राणा लाखा से युद्ध करेंगे।

(iii) "जिनकी खाल मोटी होती है, उनके लिए ---- यह कैसी उपहासजनक बात है।"

प्रश्न 1. वक्ता कौन है ? उसका परिचय दीजिए।

उत्तर - इस कथन के वक्ता मेवाड़ के शासक महाराणा लाखा हैं।

CamScanner

महाराणा में सच्चे राजपूतों के गुण हैं। एक बार उन्होंने बूँदी गढ़ पर आक्रमण कर दिया। बूँदी के राजा राव हेमू तथा उनके थोड़े से सैनिकों ने नीमरा नामक स्थान पर महाराणा लाखा को पराजित कर दिया था। इस हार से वे स्वयं को अपमानित महसूस करते हैं और आवेश में आकर इस अपमान का बदला लेने के लिए वे कसम खाते हैं कि जब तक बूँदी के दुर्ग को तहस-नहस नहीं कर देंगे, उस पर मेवाड़ का ध्वज नहीं फहरा देंगे तब तक अन्न-जल ग्रहण नहीं करेंगे। प्रस्तुत कथन में वे स्वयं को बहुत लज्जित महसूस कर रहे हैं।

प्रश्न 2. 'खाल मोटी होना' का प्रयोग किस संदर्भ में किया गया है और क्यों किया गया है?

उत्तर - 'खाल मोटी होना' का अर्थ है बेशर्म होना / निर्लज्ज होना। इस वाक्यांश का प्रयोग महाराणा लाखा ने उन लोगों के लिए किया है जिन्हें अपने मान-सम्मान की परवाह नहीं होती, जिन्हें अपने अपमान, बदनामी और किसी प्रकार के कलंक का डर नहीं होता। ऐसे लोग कायर होते हैं, वे अपने प्राणों की रक्षा हेतु युद्ध क्षेत्र से भाग जाते हैं। फिर भी उन्हें लज्जा का अनुभव नहीं होता, क्योंकि ऐसे कायर एवं स्वार्थी मनुष्यों का मान सम्मान होता ही नहीं है।

महाराणा लाखा यह सब इसलिए कहते हैं क्योंकि नीमरा के युद्ध में रात के समय हाड़ाओं के अचानक हुए हमले से उनके सैनिक भाग खड़े हुए थे और जब वे (लाखा) अपने प्राणों पर खेलकर राव हेमू से लोहा लेना चाहते थे तब सेनापति अभयसिंह उन्हें वहाँ से खींच लाए थे। यही बात उन्हें मस्तक का कलंक, अपयश और अपमान का कारण बनकर सता रही थी।

प्रश्न 3. 'उपहासजनक बात' का आशय स्पष्ट कीजिए।

उत्तर - महाराणा लाखा की सेना मुट्ठी भर हाड़ाओं के अचानक आक्रमण से घबराकर मैदान छोड़ कर भाग गई और सेनापति अभयसिंह भी युद्ध के लिए तैयार महाराणा लाखा को समझा-बुझा कर अकेले युद्ध न करने की सलाह देकर वापस लौटा लाए थे — यह घटना राणा लाखा के लिए मृत्यु से बढ़कर कष्ट देने वाली थी।

वे इस पराजय के बाद जीवित नहीं रहना चाहते थे। उनके लिए यह बहुत उपहासजनक बात थी कि लोग उनकी पराजय पर उन्हें व्यंग्य कसे और उनकी वीरता का मज़ाक उड़ाएँ। वे सोच रहे थे कि उन्होंने अपने वीर पूर्वजों के मस्तक पर कलंक लगाया है, क्योंकि राजपूत तो आन पर मिट जाते हैं, अपने प्राण बचाकर युद्ध भूमि से जान बचाकर भागते नहीं हैं।

प्रश्न ५. वक्ता अपने मस्तक से कलंक के किस टीके को, किस प्रकार धो डालना चाहता है?

उत्तर- वक्ता अर्थात् महाराणा लाखा अपने मस्तक पर लगा कलंक का टीका उस घटना को मानते हैं जब राव हेमू ने नीमरा के युद्ध में उन पर रात के समय अचानक आक्रमण कर दिया था और महाराणा लाखा के सैनिक को प्राण बचाकर भागने के लिए मज़बूर कर दिया था। महाराणा अपनी इस पराजय से अत्यंत लज्जित थे। इसी पराजय को वे अपने माथे पर लगा कलंक का टीका मानते हैं।

अपने माथे पर लगे इस कलंक को धो डालने के लिए राणा लाखा प्रतिज्ञा करते हैं कि जब तक वे बूँदी के दुर्ग में ससैन्य प्रवेश नहीं कर लेते तब तक अन्न-जल ग्रहण नहीं करेंगे।

(अंतिम पृष्ठ)

CamScanner